मरूमेघ
किसान ई पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाईन उपलब्ध

ISSN : 2456-2904
© marumegh 2022

आलेख प्राप्ति : 29-06-2022
स्वीकरण : 30-06-2022

कुक्कुट पालन में जैविक सुरक्षा

डॉ. पुष्पा लांबा[1]* और डॉ. विवेक सहारन[2]

[1] पशुधन उत्पादन प्रबंधन विभाग, राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर
[2] पशु पोषण विभाग, लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा
*ई–मेलः– plamba49@gmail.com

जैव सुरक्षा, जिसका शाब्दिक अर्थ है जीवित चीजों की सुरक्षा, एक ऐसा कार्यक्रम है जो पक्षियों को रोग पैदा करने वाले जीवों के संपर्क में आने से रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो कि कुक्कुटशालाओं में और उनके बीच रोगजनकों के प्रसार और प्रसार को कम करता है।

व्यापक अर्थों में जैव सुरक्षा में अलगाव, यातायात नियंत्रण स्वच्छता, टीकाकरण, बीमारियों की सीरोलॉजिकल निगरानी और वायु गुणवत्ता आदि शामिल हैं जो कुक्कुटशालाओं में और उसके आसपास रोगजनकों के प्रवेश और नियंत्रण को रोकने में मदद करेंगे।

जैव सुरक्षा एक रक्षात्मक स्वास्थ्य योजना और स्वच्छ प्रक्रिया है जो आपके कुक्कुटशालाओं को रोग मुक्त रखने में मदद कर सकती है। इसलिए जैव सुरक्षा मुर्गीपालन फार्म कार्यों के एकीकृत भाग में से एक है। जैसे–जैसे मुर्गी पालन अधिक से अधिक कुशल होता जाता है, वैसे–वैसे वे अपने और अपने पड़ोसियों के लिए भी खतरा बन जाते हैं और सीमित स्थान में अधिक पक्षियों की एकाग्रता बन जाते हैं। पोल्ट्री किसानों को अधिक से अधिक रोग पैदा करने वाले जीवों को खत्म करने के लिए समय निकालना चाहिए। इसलिए, नए झुंड को शुरू करने से पहले थोड़ी देर इंतजार करना बेहतर है,

आधुनिक उत्पादन तकनीकों के तहत विशेष रूप से कुक्कुट के लिए रोग के खिलाफ सुरक्षा का सबसे प्रभावी रूप जैव सुरक्षा है यानी मुर्गीपालन फार्म के वातावरण से बीमारी को बाहर करना और यह सफल और लाभदायक मुर्गीपालन की कुंजी है।

जैव सुरक्षा के लक्ष्य

- कुक्कुट परिसर में रोगजनक जीवों के प्रवेश की रोकथाम।
- आसपास के क्षेत्र के माइक्रोबियल संदूषण में कमी।
- परिसर के भीतर मौजूद रोगजनक जीवों का पूर्ण उन्मूलन।

जैव सुरक्षा के लाभ

- बीमारियों को दूर रखने में मदद करता है।
- जोखिम कम करता है।
- रोग के प्रसार को सीमित करता है।
- झुंड के समग्र स्वास्थ्य में सुधार करता है।
- मृत्यु दर के नुकसान को कम करता है।
- लाभप्रदता में सुधार।

जैविक सुरक्षा को सुचारू रूप से समझने हेतु निम्नानुसार तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है :

1) **वैचारिक जैव सुरक्षा**

- एक अलग क्षेत्र में फार्म बनाना सबसे अच्छा है, ब्रीडर फार्म के मामले में निकटतम पोल्ट्री से कम से कम तीन किमी और वाणिज्यिक परत और ब्रॉयलर फार्म के मामले में 1.6 किमी दूर है।
- प्रजनकों के मामले में, खेत उन प्रमुख सड़क मार्गों से दूर होना चाहिए जिनका उपयोग वाणिज्यिक पोल्ट्री के परिवहन के लिए किया जा सकता है।
- ब्रीडर और ग्रो–आउट फार्म और हैचरी और फीड मिल जैसी सुविधाओं के बीच पर्याप्त दूरी बनाए रखें।

2) **संरचनात्मक जैव सुरक्षा**

- अवांछित आगंतुकों को रोकने के लिए कुक्कुटशालाओं की परिधि की बाड़ लगाना।
- खनिजों, बैक्टीरिया, रासायनिक संदूषण और रोगजनक भार के लिए जल स्रोत का परीक्षण करें।
- बैग्ड फीड के भंडारण के लिए उपयुक्त स्थान।
- सफाई को आसान बनाने और वाहनों और फुटवियर द्वारा रोगाणुओं के प्रसार को रोकने के लिए कुक्कुटशालाओं के भीतर सभी मौसमों में सड़कें।
- मृत पक्षियों के सुरक्षित वैज्ञानिक निपटान की सुविधाएं।
- उपयुक्त जंगली पक्षियों और कृंतक प्रूफिंग के साथ सुरक्षित आवास।
- कृंतक और वन्य जीवन गतिविधि को रोकने के लिए कुक्कुटशालाओं के चारों ओर की भूमि की तीन मीटर की सीमा को सभी वनस्पतियों से मुक्त रखा जाना चाहिए।
- कुक्कुटषाला भवन की दिषा सही होनी चाहिए (पूर्व से पष्चिम)।
- मुख्य द्वार पर वाहन डिप होना चाहिए।
- प्रत्येक आवास के दरवाजे पर फुट डिप होना चाहिए।

3) **परिचालन जैव सुरक्षा**

- आगंतुकों और उनके उद्देश्य के लिए रिकॉर्ड बनाए रखें।
- प्रजनकों के मामले में, झुंड के वितरण के समय से निपटान तक फार्म क्षेत्र के भीतर किसी भी वाहन या उपकरण की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।
- आपातकालीन योजनाओं को शामिल करते हुए फीड मिलों, हैचरी, ब्रीडिंग और ग्रो–आउट सुविधाओं में की जाने वाली दिन–प्रतिदिन की गतिविधियों के लिए संचालन नियमावली विकसित की जानी चाहिए।
- ब्रीडर फार्म में, सभी आगंतुकों और श्रमिकों को उनके बीच क्रॉस संदूषण को रोकने के लिए साफ कपड़ों को उपयोग करने की आवश्यकता होती है।

- वाणिज्यिक ब्रॉयलर इकाई में, दो सप्ताह के न्यूनतम अंतर झुंड अंतराल की सिफारिश की जाती है।
- जैविक, रासायनिक और यांत्रिक साधनों के माध्यम से कीट और कृन्तकों को नियंत्रित करने के लिए एक प्रभावी एकीकृत कीट प्रबंधन कार्यक्रम का उपयोग करें।
- रोग निदान और उचित टीकाकरण कार्यक्रम का उपयुक्त कार्यक्रम लागू किया जाना चाहिए।
- छोटे पैमाने पर अंडा उत्पादन इकाई में, ऑल–इन–ऑल–आउट सिस्टम का पालन करें। यदि यह संभव नहीं है, तो पुललेट्स को एक ऐसे स्रोत से प्राप्त किया जाना चाहिए जो लंबवत रूप से प्रसारित रोगों से मुक्त हो।
- अंडे की पैकिंग सामग्री आदि के पुनर्चक्रण को फार्म के प्रवेश बिंदु पर कीटाणुरहित किया जाना चाहिए।
- झुंड की प्रतिरक्षा स्थिति निर्धारित करने के लिए पोस्टमॉर्टम परीक्षा और आवधिक सीरम एंटीबॉडी परख जैसी नियमित रोग निगरानी प्रक्रियाएं।
- अस्वस्थ एव मृत पक्षियों का उचित निष्पादन ।
- उम्र व मौसम के अनुसार संतुलित आहार में बदलाव करना तथा आवश्यकता अनुसार खनिज व विटामिन मिलाना।
- शाला भवन के तापमान को नियंत्रण में करने के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं करना।
- कुक्कुटशाला परिसर में बाहरी व्यक्ति को प्रवेश नहीं देना चाहिए।

जैव सुरक्षा, दवा/टीकाकरण और मुर्गीपालन फार्म का अच्छा प्रबंधन रोग नियंत्रण त्रिकोण के तीन पहलू हैं। कुक्कुट को एक ऐसा वातावरण दिया जाना चाहिए जिसमें रोग और संक्रमण को उस बिंदु तक नियंत्रित किया जा सके जहां टीकाकरण और दवा लाभकारी प्रभाव प्राप्त कर सके। रोग नियंत्रण के त्रिकोण में जैव सुरक्षा प्रमुख तत्व है।

****